चंद्र गहना से लौटती बेर

कविता का सार / प्रतिपाद्य

प्रस्तुत कविता प्रकृति सौंदर्य को दर्शाती कविता है। इसमें कवि का प्रकृति से प्रेम दिखाई देता है। कवि एक दिन चंद्र गहना स्थान से वापिस आ रहा था। वहाँ के रास्ते में उसने विभिन्न तरह के प्रकृति दृश्य देखे, जिन्हें देखकर वह मंत्रमुग्ध हो गया। इस कविता में कवि की अद्भुत कल्पनाशक्ति के दर्शन होते हैं। वह अपनी कल्पनाशक्ति से चने, अलसी, सरसों के फूल, तालाब के पानी, तालाब के किनारे पड़े पत्थरों इत्यादि का सुंदर मानवीकरण करता है। वह उस सौंदर्य को अपनी आँखों में बसा लेना चाहता है क्योंकि शहरों में अब यह सौंदर्य हे ही नहीं।

कविता का भाव

➽ प्रकृति का सौंदर्य हितकारी है। यह सौंदर्य मनुष्य की आत्मा तक को तृप्ति देता है। शहरी जीवन में ऐसा सौंदर्य कहीं गायब हो गया है।

भाषा शैली की विशेषताएँ

➽ सरल भाषा
➽ प्रवाहमयी भाषा
➽ मुहावरेदार भाषा
➽ तुकांत शब्दों का प्रयोग
➽ नाद सौंदर्य का सुंदर रूप
➽ अलंकारों का सुंदर प्रयोग
➽ गेयता का गुण विद्यमान
➽ प्रकृति का अद्भुत मानवीकरण
➽ विशेषण शब्दों का सटीक प्रयोग

कविता का उद्देश्य

➽ यह पाठ हमें प्रकृति के समीप ले जाता है।
➽ यह पाठ हमें सोचने पर विवश कर देता है कि हमने विकास के नाम पर प्रकृति के सौंदर्य को मिटा दिया है।

कविता से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा

➽ यह पाठ हमें प्रकृति के महत्व को बनाए रखने की प्रेरणा देता है।
➽ यह पाठ हमें अपने आस-पास के वातावरण से जुड़ने की प्रेरणा देता है।